International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-11-2021, Accepted: 05-12-2021, Published: 21-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 87-89

राष्ट्रभाषा हिन्दी में रोजगार के अवसर

दीक्षा मेहरा
असिस्टेट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, चन्द्रावती तिवारी कन्या स्ना. महाविद्यालय, काशीपुर, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
हिन्दी भारत की राजभाषा, सम्पर्क भाषा, विभिन्न प्रदेशों की मातृभाषा एवं लोकमत के आधार पर राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन है। वर्तमान समय में भारत ही विश्व पटल पर भी हिन्दी अपना वर्चस्व कायम किए हुए है। आज वही भाषा अपना अस्तित्व बनाए रख सकती है जो वैज्ञानिक हो और तकनीकी माध्यमों, कम्प्यूटर आदि को संचालित करने में सक्षम हो और संचार माध्यमों की अभिव्यक्ति की क्षमता रखती हो। हिन्दी इसमें पूर्णतः सक्षम है। वर्तमान में हिन्दी का विस्तार क्षेत्र बहुत विस्तृत है और उसमें रोजगार की अपार संभानाएं हैं।

मूलशब्द: राष्ट्रभाषा हिन्दी, रोजगार, अवसर

प्रस्तावना

किसी देश या राष्ट्र के सभी क्षेत्रों में व्यवहार के लिए प्रयुक्त होने वाली भाषा को राष्ट्रभाषा कहते हैं। कोई भाषा मानक भाषा बनने के पश्चात् ही राष्ट्र भाषा बन सकती है। राष्ट्रभाषा का पद उसी भाषा को मिल पाता है, जिससे राष्ट्र के सर्वाधिक लोग परिचित हों तथा उससे भावाभिव्यक्ति के साथ कार्य व रोजगार प्राप्त कर सकते हों। ''स्वतंत्र भारत के लिए संविधान का निर्माण करने वाली संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 में हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 में 'संघ की राजभाषा' संबधी प्रावधान है।''[1]

तब से लेकर आज तक हिन्दी उत्तरोत्तर समृद्धि की ओर अग्रसर है, यह हिन्दी का दुर्भाग्य ही है कि वह जिस देश की राष्ट्र भाषा हैं वही वह पूर्ण सम्मान की अधिकारिणी नहीं रही। इसके पश्चात् भी हिन्दी ने विश्व स्तर पर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। इस सम्बन्ध में डॉ. अरूणा रानी जी का कथन समीचीन है– ''हिन्दी को अपने राष्ट्रभाषा के क्षेत्र से दूर जाकर 'ग्लोबल' भाषा बनना पड़ेगा क्योंकि भारत से बाहर लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है।''[2] यह सत्य है कि वैश्वीकरण के युग में उसी भाषा का परचम लहरायेगा जो भाषा कम्प्यूटर, इटरनेट, ई–मेल, बैबसाईट की दुनिया में सर्वाधिक सशक्त भूमिका निभाएगी। अभिप्राय यह है कि जो भाषाएँ परिवर्तन को स्वीकार कर साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, व्याकरण कोश आदि क्षेत्रों में अग्रगण्य होंगी, उनकी प्रगति निश्चित है। हिन्दी इस दिशा में आगे बढ़ रही है, पर उसे अपने मार्ग में अनके चुनौतियों का सामना भी करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी चुनौती तो यही है कि भारत में भाषा का प्रश्न अत्यन्त संवेदनशील है। इस विषय पर डॉ. ए. के. रुस्तगी जी का कथन स्मरणीय हैं– ''विशाल विश्व भाषा को हिंग्लिश बनने से रोकिए, नहीं तो हमारे पास अपनी कोई भाषा नहीं रहेगी।''[3]

वास्तव में आज जो हिन्दी को लेकर पुरानी मानसिकता है उस पर विराम लगना चाहिए। आज दिन प्रतिदिन हिन्दी अधिक प्रयोजन मूलक होती जा रही है हिन्दी को रोजगार से जोड़ने वाले अनेकों स्त्रोत है। कुछ परम्परागत स्त्रोत है जिनसे अधिकांशतः लोग परिचित है किन्तु वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी भाषा में रोजगार की अनेक संभावनाएं हैं। जिनके लिए गहन अध्ययन और जागरूक होने की आवश्यकता हैं। क्योंकि हिन्दी ने अब वैश्विक बाजार में जगह बना ली है, भूमंडलीकरण के बाद से इसमें तेजी से बदलाव देखने को मिला। इसका सबसे बड़ा उदाहरण अमेरिका है मात्र अमेरिका में हिन्दी का 45 वर्ष पुराना इतिहास रहा है, वर्तमान समय में वहाँ 150 से भी अधिक संस्थानों में हिन्दी भाषा का अध्ययन सम्पन्न होता ळें

हिन्दी में वह क्षमता है जो वर्तमान समय में युवाओं को अनेक क्षेत्रों में रोजगार प्रदान कर सकती है। इसलिए हिन्दी में रोजगार के अवसरों और हिन्दी से विभिन्न क्षेत्रों में कामयाबी हासिल करने के लिए, हिन्दी से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों का विस्तृत अध्ययन और युवाओं के बीच उसकी चर्चा आवश्यक प्रतीत होती हैं। यदि हम शिक्षण से शुरूआत करें तो प्राचीन समय में शिक्षा का उद्देश्य मात्र ईश्वरीय भक्ति एंव धार्मिक भावना, उज्जवल चरित्र निर्माण व्यक्तित्व का विकास, सामाजिक कर्तव्य की भावना, राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं ज्ञार्नाजन आदि था। जिसे डॉ. अल्तेकर ने इस प्रकार परिभाषित किया है– ''धार्मिक भावना का विकास, व्यक्तित्व का विकास, सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन, सामाजिक कार्यकुशलता में वृद्वि तथा राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार–प्राचीन भारतीय शिक्षा के मुख्य उद्देश्य एवं आदर्श बताये जा सकते हैं।''[4] किन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्राचीन शिक्षा प्रणाली से सर्वथा भिन्न दृष्टिगोचर होती है। प्राचीन शिक्षा पद्वति की श्रद्वा, भक्ति, सेवा, आदर, आत्मानुशासन, गुरू, शिष्य परम्परा प्रायः लुप्त हो चुकी है। पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण से छात्र असंतोष, बेरोजगारी अनुशासनहीनता, वर्ग–संघर्ष आदि बुराइयाँ दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। हिन्दी भाषा के सन्दर्भ में यह बात की जाए तो आज का विद्यार्थी केवल रोजगारपरक विषय का ही चयन अध्ययन हेतु करता है। आज वह अभिव्यक्ति कौशल की पूर्णतः प्राप्ति करना चाहता है जिसके लिए वह अंग्रेजी माध्यम को आत्मसात् करने का भरसक प्रयत्न करता है किन्तु इस स्थिति में उसकी स्थिति त्रिशंकु सी हो जाती है वह किसी भी दिशा में पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाता। जीविकोपार्जन की दृष्टि से यदि हिन्दी को देखा जाए तो वह छात्र की विवेक हीनता एवं मानसिक रूग्णता के कारण उपेक्षित हो गई है। वर्तमान समय में इसी मानसिक रूग्णता को दूर कर हिन्दी को स्वस्थ दृष्टि से देखने की आवश्यकता है।

हिन्दी ऐसी सर्वग्राही भाषा है, जिस भाषा को विषय के रूप में प्राथमिक स्तर से ही पढ़या जाता है। हमारे देश का कोई भी ऐसा राज्य नहीं है जहाँ हिन्दी भाषा का एक विषय रूप में पढ़न–पाठन न होता हो, देश के सभी प्राथमिक, माध्यमिक,

स्नातक, स्नातकोत्तर विद्यालयों/महाविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन हेतु शिक्षकों की आवश्यकता होती है, अतः नियमानुसार प्रत्येक स्तर के शिक्षक हेतु अलग–अलग योग्यताएं निर्धारित की गई है, अतः सर्वप्रथम शासन और विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा निर्धारित इन योग्यताओं की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है यथा प्राथमिक स्तर के शिक्षक के लिए स्नातक होने के साथ ही (डीएलएड डिप्लोमा इन एलीमेंटरी एजुकेशन) का कोर्स आवश्यक है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षण हेतु पात्रता पाप्त करने के लिए बी.एड (बैचलर ऑफ एजुकेशन) इण्टरमीडिएट स्तर पर शिक्षण हेतु बी.एड के साथ स्नात्कोत्तर होना आवश्यक हो जाता है। साथ ही केन्द्र तथा अलग–अलग राज्यों द्वारा समय–समय पर टेट, सीटेट, यूपीटेट जैसी परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयों में अपने भविष्य को तलाशने वाले युवाओं के लिए स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर शिक्षण हेतु नेट (राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा) तथा पीएच.डी. (डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी) की डिग्री हासिल करना आवश्यक होता है। नेट की परीक्षा एनटीए द्वारा प्रत्येक वर्ष में दो बार आयोजित की जाती है, साथ ही पी.एच.डी हेतु भी प्रत्येक वर्ष विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षओं का आयोजन किया जाता है। अतः हिन्दी भाषा एवं साहित्य का समुचित ज्ञान रखने वाले हिन्दी को रोजगार के रूप अपनाकर एक कुशल शिक्षक का पद प्राप्त कर जीविकोर्पाजन कर सकते हैं।

खादी का कुर्ता, आखों पर चश्मा और जेब में कम पैसे, कुछ ऐसी ही तस्वीर उभरती है किसी लेखक की। लेकिन आज के वर्तमान समय में यह तस्वीर बहुत बदली चुकी है। आज वे उद्यमी भी हैं और युवाओं को प्रोत्साहित करने वाले वक्ता भी। इनमें से कई नाम तो ऐसे हैं जो विश्व पटल पर प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं फिल्म, गीत और धारवाहिक कार्यक्रमों के लेखन से नाम और शोहरत दोनों अपने नाम कर चुके हैं दुनिया आज इनका नाम बड़े आदर से लेती है इस क्षेत्र में प्रसिद्धि पाने वालो की एक लम्बी सूची है पर चेतन भगत, मनोहर श्याम जोशी, प्रसून जोशी, गोपालदास नीरज आदि हिन्दी सिनेमा जगत के ख्याति प्राप्त लेखक है। वर्तमान समय में युवाओं के लिए इस क्षेत्र में सुनहरे अवसर है अपने भीतर के कलाकार को विश्व स्तर पर निखारने के लिए एक मंच है, जहाँ कामयाबी की अपार संभावनाएँ हैं। हिन्दी के साहित्यिक क्षेत्र में भी जीविकोपार्जन के लिए अनेक अवसर उपलब्ध हैं हिन्दी में आज कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, कहानी, आलोचना, जीवनी, यात्रावृत्तान्त, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, लघुकथा आदि विधाओं में भरपूर मात्रा में रचनाएं हो रही हैं साथ ही इन रचनाओं को प्रकाश में लाने वाली पत्रिकाओं की सूची भी प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जो हिन्दी भाषा का उचित ज्ञान रखने वालों को रोजगार के विभिन्न अवसर भी प्रदान कर रही है। केन्द्र व राज्य सरकारें भी लेखन को आगे बढ़ाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रही है, समय–समय पर वह विभिन्न पुरस्कारों से लेखकों को सम्मानित कर प्रोत्साहित करती है और उचित धनराशी भी प्रदान करती है। जिससे वे सुचारू रूप से अपनी लेखन प्रतिभा को विकसित कर सके।

केन्द्र सरकार ने कार्यालयी कामकाज को हिन्दी में सुचारू रूप से पूर्ण करने हेतु तथा हिन्दी के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न विभागों में राजभाषा अधिकारी के पदों का संजृन भी किया है। राजभाषा अधिकारी भारतीय केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी अनुवाद के अलावा राजभाषा हिन्दी के अन्य कामकाज जैसे हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन, हिन्दी की तिमाही बैठकों का आयोजन, राजभाषा निरीक्षण आदि कार्य भी सम्पन्न कराते हैं। इन पदों का सृजन राजभाषा विभाग के अनुसार विभिन्न कार्यालयों में किया जाता है। राजभाषा विभाग समय–समय पर इन पदों की नियुक्ति हेतु समाचार पत्रों में विज्ञप्ति निकालता है। हिन्दी भाषा में अध्ययनरत युवाओं के लिए इस क्षेत्र में सुनहरे भविष्य के अवसर उपलब्ध है।

हिन्दी में उचित अध्ययन के साथ यदि आप किसी अन्य भाषा में पारंगत हो तो वर्तमान समय में अनुवादक/द्विभाषिया की भूमिका को आप रोजगार के रूप में अपना सकते हो। भारत में कई विश्वविद्यालयों द्वारा विश्व की अन्य भाषाओं का अध्ययन उपल्बध कराया गया है। भारत तथा विश्व स्तर पर कई संस्थानों को अनुवादक के जरूरत होती है। वे समय–समय पर द्विभाषी युवाओं को रोजगार प्रदान करते हैं, साथ ही अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में लेखन के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखकों की रचनाओं का अनुवाद भी हिन्दी भाषा में किया जाता है। ख्याति प्राप्त फिल्मों, धारवाहिकों, गीतों, विज्ञापनों आदि के अनुवाद का प्रचलन दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में विभिन्न देश में आपस में कार्य, व्यापार, विचार, संस्कृति आदि का आदान–प्रदान प्रोत्साहित होकर कर रहे हैं, एक देश के विचारों को दूसरे देश तक पहुँचाने में द्विभाषियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस सम्बन्ध में अर्जुन चौहान जी के विचार स्मरणीय हैं– ''आज ज्ञान–विज्ञान की सामग्री, कार्यालयीन सामग्री, वाणिज्य विषयक सामग्री तकनीक सामग्री, सूचना एवं प्राद्योगिकी की सामग्री और साहित्यिक सामग्री का अनुवाद होना दुनिया के प्रत्येक राष्ट्र एवं समाज की आवश्यकता बनी है। अतः अनुवाद क्षेत्र वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है। विशेषतः हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता स्वाधीन भारत की और भारतवासियों की आवश्यकता है। जहाँ अधिक लोग हिन्दी जानते, मानते समझते हैं, जहाँ की जनता हिन्दी को अपनाती है और जहाँ आम आदमी हिन्दी का प्रयोग करता है और जन–मन ही हिन्दीमय बन गया है वहाँ ज्ञान विज्ञान और श्रेष्ठ साहित्य कृतियों के अनुवाद की मांग होना स्वाभाविक कहना होगा। अतः यहाँ हिन्दी अनुवाद की माँग होना भी स्वाभाविक है।''[5]

आज बड़ी संख्या में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। बहुत सी पत्र–पत्रिकाएं अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। इन दोनों में अधिकतर खबरें और रचनाएं एक दूसरे से अनुवाद के माध्यम से प्रकाशित होती है। अखबारों में विज्ञान, तकनीक व विदेशी खबरों का अनुवाद अंग्रजी से या अन्य भाषाओं से हिन्दी में किया जाता है। यदि आप की एक से अधिक भाषाओं में अच्छी पकड़ है तो प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में रोजगार की कमी नहीं है। वर्तमान समय में हजारों टेलीविजन चौनल हैं जिन पर हिन्दी में ही कार्यक्रमों का प्रसारण होता है। इसकी वजह से आज कार्टून नेटवर्क, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्रॉफी जैसे प्रसिद्ध चौनलों को भी हिन्दी में कार्यक्रम बनाने पड़ रहे हैं। आज हिन्दी का बाजार इतना बढ़ गया है कि विदेशी चौनलों को भी अपने कार्यक्रम हिन्दी में प्रसारित करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। आजकल विज्ञापनों की भाषा देखिये, आलोचना की भाषा देखिये सभी हिन्दी के बदलते हुए संसार के सशक्त उदाहरण हैं। दिल्ली जैसे शहर में हर वर्ष कितने कार्यक्रम सामाजिक विषयों पर या साहित्यिक विषयों पर हो रहे है। उनमें प्रतिभाग करने वाले विद्वतजन मंचों पर जिस हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं वही आज की हिन्दी का उत्कृष्ट रूप है आज हिन्दी भाषा के प्रयोग, बाजार में उसकी लोकप्रियता, रोजगार के क्षेत्र में जो वृद्वि हुई है, उसे हम नकार नहीं सकते। लोकप्रियता संचार माध्यमों का सबसे बड़ा उद्देश्य है और संचार में हर रोज बदलती हुई हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। हमारी राष्ट्रभाषा ने इस परिवर्तन को हर युग में अपनाया है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आज हिन्दी का एक समृद्ध फलक फैला हुआ है गूगल का आभार मानिए जिसने हिन्दी के कंप्यूटर प्रयोग को लगातार उपभोक्ताओं के लिए सरल बनाने का काम किया है। आज पत्र–पत्रिकाओं के पोर्टल एवं ब्लॉग भी इंटरनेट पर उपलब्ध है यह भी रोजगारपरक बनता जा रहा है, माइक्रोसॉफ्ट ने हिन्दी

में अनेक फॉण्ट उपलब्ध करायें है। हिन्दी में विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर निमार्ण युवाओं के लिए आकर्षक रोजगारपरक अवसर है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी भाषा का उचित ज्ञान आपको सफलता की ओर अग्रसर करने में महती भूमिका निभाता है। इस विषय पर ऋषभदेव शर्मा का कथन उल्लखनीय हैं– ''हिंदी सब प्रकार की छुआछुत से मुक्त उदार भाषा होने के साथ–साथ भली प्रकार नियमबद्व भाषा है, इसलिए यह बाजार से लेकर मीडिया तक ही नहीं, पुरातन विद्याओं से लेकर आधुनिक अनुशासनों तक की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम है यह तो मानी हुई बात है कि हिंदी सीखना बहुत आसान है लेकिन अब यह मानना होगा कि बाजार, फिल्म, विज्ञापन, सोशल मीडिया, व्यापार, व्यवसाय, राजनीति, विदेश नीति या और भी तमाम आज की दुनिया के व्यवहार क्षेत्र में हिन्दी को अपनाना कोई मुश्किल काम नहीं है, मुश्किल है तो भारतीयों की भाषिक हीनभावना से मुक्ति।''[6]

निष्कर्ष

कहा जा सकता है, हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी की दिनोदिन बढ़ती लोकप्रियता और अंतर्राष्ट्रीय महत्व के साथ–साथ इसमें रोजगार की अवसरवादिता की भी वृद्वि हुई है। हिन्दी में उचित अध्ययन कर विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में अपना उज्जवल भविष्य बना सकते हैं अतः यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं। आवश्यकता है केवल विषय के गहन अध्ययन और जागरूकता की।

सन्दर्भ

1. नव उन्नयन स्मारिकाः सं. डॉ. पूरन चन्द्र टण्डन, पृष्ठ–7, प्रकाशक–डी–67,शुभम एन्वलेव, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063, वर्ष–2009
2. शोध दिशा, शोध पत्र डॉ. अरूणा रानी, पृष्ठ–51, प्रकाशन–हिन्दी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार बिजनौर–246701, वर्ष–2010
3. समाजा विज्ञानः डॉ. ए. के रस्तगी, पृष्ठ–204, आर्यव्रत प्रकाशन अमरोहा, वर्ष–2003
4. भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकासः डॉ. मीनाक्षी भटनागर, अनुराग भटनागर, पृष्ठ–6 आर्यन प्रेस मेरठ
5. मीडिया कालीन हिन्दीः स्वरूप एवं संभनाएंः अर्जुन चौहान
6. हिंदी भाषा के बढ़ते कदमः ऋषभदेव शर्मा, पृष्ठ– 305 प्रकाशन– तेज प्रकाशन नई दिल्ली, वर्ष–2005